

ईर्ष्यालु nachlässige Schreibart für ईर्ष्यालु HAL. J. im ÇKDr.

ईर्षित (für ईर्ष्यित) adj. beneidet: पत्युर्वाहिकमीर्षितं प्रसवनं नाशस्य केतुः स्त्रियाः HIT. I, 107, v. 1.

ईर्षितव्य (für ईर्ष्यितव्य) adj. der Eifersucht nachzugehen: तस्माद्भित्तुपु दारानाक्रामतु नेर्षितव्यम् PRAB. 49, 11.

ईर्षु (für ईर्ष्यु) adj. neidisch, eifersüchtig MBH. 1, 6440 (ईषु). 3, 16117. HIT. I, 22.

ईर्ष्य, ईर्ष्यति beneiden, eifersüchtig sein DHĀTUP. 13, 4. ईर्ष्यता P. 6, 4, 49, Sch. ता ईर्ष्यतीः पुनरगच्छन् TS. 2, 3, 5, 1. mit dem dat. der Person P. 1, 4, 37. VOP. 3, 15. देवतायेत्येति, भार्यामोर्ष्यति नैनामन्यो द्राक्षीदिति P., Sch. Vgl. ईर्षित fg. — desid. ईर्ष्यिषिषति oder ईर्ष्यिषिषति P. 6, 1, 3, VArtt. 1 und Sch. — Wohl eine Zusammenziehung von ईरस्य.

ईर्ष्यक (von ईर्ष्य) adj. eifersüchtig; so heisst derjenige, welcher durch den Anblick einer Begattung selbst zum Beischlaf fähig wird SUÇR. 1, 318, 15.

ईर्ष्या (wie eben) f. Neid, Eifersucht AK. 1, 1, 2, 24. H. 391. AV. 6, 18, 1. 3. 7, 43, 1. एतामेतस्येर्ष्यामुद्राग्निमिव शमय 74, 3. P. 1, 4, 37. M. 7, 48. MBH. 3, 11240. 14, 1025. SUÇR. 1, 70, 13. 243, 9. ईर्ष्याकलकृ BHART. 1, 2. KATHAS. 13, 98. परमेष्वाधर्मं वक्तुः PAÑKAT. 218, 5. PRAB. 49, 11. KATHAS. 3, 15. 10, 10. SĪH. D. 46, 16. VOP. 3, 15. सेर्ष्य adj. PRAB. 17, 6. f. सा KATHAS. 13, 75. सेर्ष्यम् adv. 6, 145. — Vgl. ईर्ष्या.

ईर्ष्यालु (von ईर्ष्या) adj. neidisch, eifersüchtig H. 391. Hār. 136.

ईर्ष्यु (von ईर्ष्य) adj. eifernd AV. 6, 18, 2. — Vgl. ईर्षु.

ईर्लि f. = ईर्ली Schol. zu AK. 2, 8, 2, 59.

ईर्लिन m. N. pr. Sohn Tamsu's und Vater Dushjanta's MBH. 1, 3706. fg. 3780. fg.

ईर्ली f. eine bes. Art Waffe (करपालिका) AK. 2, 8, 2, 59. ein kurzes einschneidendes Schwert (wie es die Turushka gebrauchten) H. 785.

ईर्वत् (von 2. ई) adj. so gross, so stattlich, so trefflich, so viel, tantus: य ईर्वते ब्रह्मणे गातुमैरत RV. 4, 4, 6. अस्य धा वीर ईर्वतो ऽग्नेरीणीत मर्त्यः 13, 5. मन्त्रं हि ऽग्नेर्वा गच्छेय ईर्वतो ध्यून् 43, 3. प्र ये वसुन् य ईर्वदा नमो दुः 5, 49, 5. तनाय चिद्य ईर्वत उ लोकां चकार 6, 73, 2. उपश्रोता म ईर्वतो वचोऽसि 7, 23, 1. 36, 18. आ स एतु य ईर्वदा ऽग्नेर्देवः पूतमादेर्दे । यदा चिदशो ऽश्वः पृथुश्रवस्यादेर्दे 8, 46, 21. — Vgl. इर्वत्.

1. ईर्म्, ईर्ष्टे und ईर्शे (ved.; ईर्शते und ईर्शति ÇVETĀÇV. Up. 1, 10. 3, 1. 2), ईर्त्ते und ईर्शिषे (P. 7, 2, 77. VOP. 9, 39), ईर्शे, ईर्शाथे, ईर्शते, ईर्शिधे (PAT. zu P. 7, 2, 77), ईर्शमेः ईर्शिष, ईर्शिधम् (SIDDH. K. zu P. 7, 2, 77); ईर्शीय; ईर्शत 3. pl.; ईर्शिरे; ईर्शिष्यति (KATHOP. 1, 27); ईर्शितुम् (P. 7, 2, 8, Sch.), ईर्शित; DHĀTUP. 24, 10. mit dem gen. P. 2, 3, 52. 1) zu eigen haben, Eigenthümer sein; mit gen.: (एतं पिव) यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम् der dir gehört, der von jeher deine Speise ist RV. 6, 41, 3. (पिव) कृत्रादा सोमं प्रयोमो य ईर्शिषे 2, 36, 1. तेनामोर्विदुः प्रभृतिं य ईर्शिषे 24, 1. 16, 6. यदिन्द्र यावत्स्वमेतावद्कृमीणीय wenn ich so viel besässe wie du Indra 7, 32, 18. त्वमीशिषे वसुपते वसूनाम् 1, 170, 5. मत्कृन् एषां पितरश्चनेरिरे 10, 36, 4. अस्य धा वीर ईर्वतो ऽग्नेरीणीत मर्त्यः einen solchen Agni sollte der Mann (immer) zu eigen haben 4, 13, 5. नेशे वलस्य MBH. 3, 955. धनानामीशते यत्ताः BHART. 18, 20. zu etgen sein, gehören; intrans.: नमो देवेभ्यो नम ईर्श एषाम् Ehre den Göttern! Ehre gehört ihnen RV. 6, 51,

8. नमो अस्य प्राद्व एक ईर्श (wenn एक ईर्श für एकमीश geschrieben ist; vgl. die Bemerkung zu इव) 3, 31, 4. — 2) verfügen über; vermögen, mächtig sein; Herr sein einer Sache: नहि बदरे निमिषश्चनेर्शे RV. 2, 23, 6. अयमग्निः सुवीर्यस्येशं मरुः सौभगस्य । राय ईर्शे स्वपत्यस्य गोमन्त ईर्शे वृत्रकथानाम् 3, 16, 1. अग्निरीशे वसव्यस्य 4, 33, 8. (P. 4, 4, 140, VArtt. 3). ईर्शे रायः तस्यस्य चर्षणीनाम् 20, 8. यावद्देशे ब्रह्मणा वन्दमानः 3, 18, 3. ये संग्रामस्येशे AV. 5, 21, 7. मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत इव 2, 23, 10. मा नै स्तेन ईर्शत 42, 3. 6, 28, 7. यथानाम व ईर्शमेः AV. 4, 38, 7. TS. 2, 4, 10, 2. ÇAT. Br. 1, 8, 3, 12. 2, 3, 4, 8. न वै तस्य त ईर्शते darüber haben diese nicht zu verfügen TS. 3, 1, 9, 6. एवं शंसिषादि वाच ईर्शत wenn er bei Stimme ist AIR. Br. 3, 44. नात्मनश्चनेशत न दास्य चनेशत ÇAT. Br. 4, 4, 2, 13. यमो ह वा अस्यामवसानस्येष्टे 13, 8, 2, 4. न कोचिदीशते — स्वयं ग्राह्यस्य MBH. 3, 13863. विषयाणां च नेशिषे BHART. 18, 15. 9, 57. mit folg. gen. eines infin. (vgl. ईश्वर): यस्य नूचिदेव ईर्शे पुरुहूत योतोः RV. 6, 18, 11. ईर्शे कृष्मिर्मृतस्य भूरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः 7, 4, 6. mit dem inf. (auf तुम्): सेतुं न तत्पूर्वमवर्णामीशे RAGH. 14, 38. माधुर्यमीष्टे करिणान्ग्रहीतुम् 18, 12. mit dem loc. eines nom. act.: तस्माद्देशे नाहं पन्नगस्य प्रनाथे MBH. 13, 26. vom männlichen Vermögen: न सेष्टे यस्य रम्बते उत्तरा मकथ्याई कपृत् RV. 10, 86, 16. pass. (das obj. im nom.): तेनेशितं कर्म ÇVETĀÇV. Up. 6, 2. — 3) gebieten über, herrschen; mit gen.: यदीशियामतानामुत वा मर्त्यानाम् RV. 10, 33, 8. य ईर्शे अस्य द्विपदश्चतुष्टयः 121, 3 (ÇVETĀÇV. Up. 4, 13). समुद्र ईर्शे स्रवताम् AV. 6, 86, 2. भुवो दिवो भुव ईर्शे पृथिव्याः 11, 2, 27. त्वमीशिषे पशूनां पारिवानाम् 2, 28, 3. ÇAT. Br. 1, 7, 2, 1. 2. पुरुषो वै पशूनामैन्द्रस्तस्मात्पशूनामीष्टे 4, 5, 5, 7. एकः सन्वह्णामीष्टे 5, 1, 5, 4. अहमेव पशूनामीशि (ved.) Sch. zu P. 3, 4, 8. 96. य ईर्शे ऽस्य जगतो नित्यमेव ÇVETĀÇV. Up. 6, 17. mit dem acc.: य एको बालवानीशित ईर्शनीभिः (sic) सर्वलोकाणीशत ईर्शनीभिः (sic) 3, 1. ईर्शलोकाणीशत ईर्शनीभिः 2. त्तरात्मानवीशते देव एकः 1, 10. स हि सर्वमीष्टे ÇAKAR. zu 1. ÇOP. 1. ohne obj. BHART. 3, 53. als Gebieter verfahren, seine Erlaubnisse ertheilen: जीविष्यामो यावद्देशिष्यामि तम् (यम्) KATHOP. 1, 27.

2. ईर्म् m. Gebieter, Herr VS. 40, 1. 1. ÇOP. 1. ein Bein. Çiva's VOP. 3, 10. ईर्श (von ईर्म् 1) adj. subst. (f. ईर्शा) a) Eigenthümer, Besitzer: तदीशः (d. i. nित्येपस्य) PAÑKAT. I, 16. आचार्या ब्रह्मलोकेशः (wird theilhaftig) प्राजापत्ये पिता प्रभुः । अतिथिस्त्विन्द्रलोकेशः M. 4, 182. 184. — b) der über Etwas verfügen kann; vermögend, im Stande seiend; mit dem gen.: ईर्शो ऽहमपि सर्वस्य MBH. 1, 4532. नाहमीशात्मनो राजन्कन्या पितृमती कृत्स्नम् 6378. न चाहमीशा देहस्य 6379. कथंचिदीशा मनसा बभूवुः KUMĀRAS. 3, 34. अनीशया शरीरस्य VIKR. 37. mit dem inf.: ईर्शो ऽसि तपसा सर्वं समाकर्तुम् MBH. 3, 8590. 10746. R. 5, 64, 17. ÇĀK. 74, v. 1. PRAB. 33, 11. — c) Herr, Gebieter TRIK. 3, 3, 426. H. 338. an. 2, 543. MED. Ç. 2. ÇVETĀÇV. Up. 1, 8. 6, 17. BHART. 3, 58. स व्याघ्रो ऽभवद्दारायाणां पशूनां राजा, स सिंहो ऽभवद्दारायाणां पशूनामीशः ÇAT. Br. 12, 7, 4, 8. ईर्शो दाष्टस्य वरूणाः, ईर्शः सर्वस्य जगतो ब्राह्मणो वेदपारगः M. 9, 245. ईर्शश्च वनस्यास्य R. 5, 64, 7. कुताशमीशं देवानाम् N. 4, 9. यस्मादीशो मरुतामीश्वराणाम् HARIV. 7583. सुरेश MBH. 13, 819. भुवनेश ÇVETĀÇV. Up. 6, 7. विंशतीश ein Gebieter, Chef über 100 (Dörfer) M. 7, 115 — 117. मुनीश der Fürst unter den Muni (Vālmiki) R. Einl. — 2) m. a) Gemahl H. 8. — b) ein Bein. Çiva's AK. 1, 1, 25. 2, 4. TRIK. H. 193. H. an. MED. MBH. 13, 588. 820. HARIV.